इकाई 2 यहूदी धर्म

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम विश्व के प्राचीनतम एकेश्वर वादी धर्म यहूदी के बारे में पढ़ेंगे। यद्यपि, यह धर्म किसी भी परंपरागत पाश्चात्य मापदंडों अथवा वर्ग जैसे कि धर्म, प्रजाती अथवा संस्कृति में आसानी से समाहित नहीं किया जा सकता। यहां हम इस धर्म के उद्भव एवं इतिहास, मूसा के एकेश्वरवाद, उनकी आस्था एवं रीतियों एवं इसकी विभिन्न शाखाओं का विवेचन करेंगे। इस इकाई के अंत तक हमें निम्न लिखित बातों का ज्ञान हो जाएगा;

- एक धर्म के रुप में यहूदीवाद की आस्थाओं एवं रीतियों की विशिष्टता का ज्ञान।
- इस धर्म के उद्भव के ऐतिहासिक प्रस्तुतीकरण का ज्ञान
- यहूदी धर्म से इसाइयत तक निरंतरता को खोज सकने का ज्ञान

2.1 प्रस्तावना

अपने गूढ अर्थों में यहूदी धर्म से अभिप्राय यहूदियों की धार्मिक आस्थाओं एवं रीतियों से है और सामान्यतः इसे प्राचीनतम एकेश्वर वादी धर्म माना जाता है। इसका लिखित इतिहास लगभग 4000 वर्ष पुराना है। मध्यपूर्व में प्राचीन हिब्रू लोगों की आस्था के रुप में इसका आरंभ हुआ और 'हिब्रू बाइबल' (*आल्ड टेस्टामेंट*) इसका पवित्र ग्रंथ है। हिंदू धर्म के समान यहूदी धर्म का भी न तो कोई प्रणेता है और न ही इतिहास में इसके आरंभिक बिंदु को स्थापित किया जा सकता है। हालांकि, इस धर्म के कई अनुयायियों का यह मानना है कि यहूदी धर्म का आरंभ पितामह इब्राहम से होता है। तथापि यहूदियों का मानना है कि एक मात्र सत्य ईश्वर का सिद्धान्त सर्वप्रथम आदम को

प्रदान किया गया था। जहां से वह अनेकों पूर्वजों जैसे कि सेथ, नोहा आदि से होता हुआ इब्राहम तक पहुंचा। जोशुआ की पुस्तक यह सत्यापित करती है कि इब्राहिम भी विलक्षण देवों की कैल्डिया में पूजा किया करते थे (24:12,15)। दूसरे शब्दों में, इब्राहिम के सम्प्रदाय का धर्म कैल्डियन्स के उर प्रदेश से चलकर सर्वप्रथम कनान के हश्न में पहुँचा। यहां से वह मिश्र गया और अन्ततः यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गया।

2.2 मूसा का एकेश्वरवाद

इब्राहिम का ईश्वर के साथ अनुबंध राष्ट्रीय आर्कषण के साथ ऐतिहासिक परिवर्तन से होता हुआ मिश्र से आगे बढ़ गया। मूसा ने अपनी जादुई शक्तियों से मिश्र के फराहो को प्रभावित कर यहूदियों के लिये स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। अब, यहूदियों को मिश्र से लेकर इजराइल के पवित्र स्थल तक पहुंचाने का उत्तरदायित्व मूसा का ही था। उन्होंने विरोधी संप्रदायों के मध्य सुमधुर संबंध के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण नियम बनाए। इसके लिए उन्होंने अग्रलिखित दस आदेश (Ten Commandments) दिए;

1) मैं ही तुम्हारा प्रभु, तुम्हारा ईश्वर हूँ जो तुम्हें मिश्र से अर्थात दास्ता से बाहर लाया है। तुम्हारा कोई अन्य ईश्वर नहीं है और न ही कोई अन्य प्रतीक है।

2) तुम्हें मेरे अतिरिक्त किसी अन्य देवता को नहीं मानना चाहिये।

3) तुम्हें अपनी पवित्रता बनाए रखने के लिये *सब्त* दिवस को स्मरण रखना चाहिए।

4) तुम्हें सदैव माता–पिता का सम्मान करना चाहिए।

5) तुम्हें किसी की हत्या नहीं करनी चाहिए।

6) तुम्हें व्याभिचार नहीं करना चाहिए।

7) तुम्हें चोरी नहीं करना चाहिए।

8) तुम्हें अपने पड़ोसियों के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए।

9) तुम्हें दूसरे लोगों की चीजों को लेने की इच्छा नहीं करनी चाहिये।

10) तुम्हें पड़ोसी की पत्नी को पाने की अभिलाषा नहीं करनी चाहिए।

यद्यपि मिश्र, बेबीलोनिया, फिनीशिया के देवों की मान्यता थी कि अनुयायियों को उनके सम्मान में मंदिर बनाने चाहिए एवं विभिन्न प्रकार की बलि देनी चाहिए। वहीं यहूदी धर्म के देव उच्चतम नैतिक व्यवहार एवं आचरण की अपेक्षा करते थे। प्रभु उन्हें मानवोचित एवं सुसंस्कारी बनाना चाहते थे।

इस प्रश्न पर कि मूसा के काल में एकेश्वरवाद का अस्तित्व था या नहीं, काफी विवाद हो चुके हैं। एकेश्वरवाद अनेक देवों के अस्तित्व को नकारता है। विद्वानों की मान्यता है कि मूसा ने एकेश्वरवाद को स्थापित करने का भरपूर प्रयास किया। हम देखते हैं कि जहां फिनीशियन, आर्मीनियन, बेबीलोनियन एवं मिस्त्र ने अपने देवों की संख्या न केवल बढ़ा दी अपितु उन्हें स्त्री–पुरुष में विभाजित भी कर दिया, वहीं हिब्रू संस्कृति में देवी का अस्तित्व पूर्णतः विलुप्त है। कुछ अंशों में देवी आशेरा को यहोवा की पत्नी माना गया किंतु उनके स्थल को भी मूर्ति पूजा का प्रतीक मानते हुए नष्ट कर दिया गया।

2.3 यहूदी धर्म की विजय, स्थापना एवं उदभव

कनान की जनता तक पहुंचने से पहले ही मूसा की मृत्यु हो गई। उनके पश्चात नेतृत्व जोशुआ को प्राप्त हुआ। जोशुआ की पुस्तक यह बताती है कि इजराइलियों ने अपनी सेना के द्वारा कनान के सम्पूर्ण क्षेत्र पर सैन्य कार्यवाही से विजय प्राप्त कर ली थी। किन्तु जजेज की पुस्तक यह बताती है कि यह एक कालिक परिवर्तन था न कि एक तीव्र सैन्य विजय। जेरिखो के अन्वेषण से भी यही तथ्य सामने आता है। इन दोनों तथ्यों के मध्य की स्थिति के आधार पर इतिहास की पुर्नरचना की जा सकती है। जब मिस्र से भागने वालों (मूसा का संगठन) ने कनान के क्षेत्र में प्रवेश किया, तब वहां उनकी मुलाकात ऐसे लोगों से हुई जो विभिन्न राज्यों के मध्य संघर्ष के कारण तटीय क्षेत्रों से यहां विस्थापित हो गये थे। दासता, अकाल एवं युद्ध ने उन्हें सुरक्षित स्थान खोजने के लिए विवश कर दिया था। पहाड़ी क्षेत्र दो कारणों से अधिक सुरक्षित थे:

1) इस काल में रथ युद्ध का प्रमुख साधन हुआ करते थे। रथ ऊंची चढ़ाइयों पर नहीं चढ़ सकते थे और ऊपर रहने वाले लोग लाभ की स्थिति में होते थे। अतः इस क्षेत्र में शांति रहती थी और इसे 'दूध के क्षेत्र' (समृद्ध क्षेत्र) के नाम से जाना जाता था।

2) पहाड़ी क्षेत्रों में शहद, फल और पशुओं के रुप में प्रचुर खाद्य उपलब्ध था। इसे प्रतीक रूप में 'शहद के क्षेत्र' का नाम प्रदान किया गया है। अतः ये पहाड़ी क्षेत्र दो समूहों के लिए सुरक्षित सिद्ध हुए –तटीय आदिवासी (कनानवासी) और मूसा का समूह। दोनों समुहों ने अपने अनुभव बांटने पर यह पाया कि एक ही ईश्वर ने दोनों समूहों को दमनकारी शक्तियों से मुक्ति दिलाई है। अतः उन्होंने एक संघ के निर्माण का निश्चय किया, जिसमें तीन बातें समान थी : ईश्वर, एक जनता, एक क्षेत्र।

यहूदियों का राजनैतिक विस्तार, बौद्धिक उपलब्धियां एवं धार्मिक विचार डेविड एवं सोलोमन के काल में चरम पर पहुंच गये थे। आध्यात्मिक शक्तियों को राजनीति के साथ मिश्रित करने में डेविड सफल रहे। इसकी अभिव्यक्ति डेविड को दैवीय मानने में स्पष्ट होती है। इसके पश्चात झियोन पर्वत को यहोवा निवास स्थान बनाने एवं *आर्क ऑफ द कावेनंट* को जेरुसलम पहुंचाने में डेविड का विशेष योगदान रहा। इस प्रकार जेरुसलम यहूदी धर्म की प्रमुख धार्मिक एवं राजनैतिक राजधानी बन गई। सोलोमन ने जेरुसलम को मन्दिरों का शहर बनाया एवं इस कारण राष्ट्र के अन्य भागों से ऐसे स्थल विलुप्त होते गये।

यहूदी लोग पृथ्वी को प्रमुखतः तीन महाद्वीपों – एशिया, अफ्रीका एवं यूरोप में विभाजित करते हैं तथा इन तीनों महाद्वीपों की उत्पत्ति क्रमशः नूह के तीन पुत्रों –सेम, हैम, एवं जापेथ से मानते हैं। पृथ्वी का केंद्र जेरुसलम तथा जेरुसलम के मन्दिर को यहोवा की पूजा का केंद्र स्वीकार करते हैं।

921 ई. पू. में सोलोमन की मृत्यु के पश्चात इस साम्राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया गया; इजराइन का उत्तरी साम्राज्य एवं जूदाह का दक्षिणी साम्राज्य। जेरुसलम को जूदाह की राजधानी बनाया गया। जिस पर रहोबोम का शासन हुआ। यह विभाजन राजनैतिक एवं धार्मिक दोनों रुपों से विनाशकारी सिद्ध हुआ। साओल, डेविड एवं सोलोमन के केन्द्रीय उपदेशों को नकार दिया गया। जनता के जेरुसलम में पलायन को रोकने के लिए इजराइल के राजा जेरोबोम ने उत्तरी भाग में मंदिर

बनवाए। इसने मूर्ति पूजा को बढ़ावा दिया तथा धार्मिक सामंजस्य की आवश्यकता को जन्म दिया। यद्यपि बछडे का प्रतीक मूल रूप से अनिबंधित ईश्वर यहोवा को प्रदर्शित करने के लिये था किन्तु इस प्रकार की पूजा जेरुसलम में होने वाली पूजा की तुलना में निकृष्ट श्रेणी की पूजा हो गयी, क्योंकि जेरुसलम में कोई मूर्ति पूजा नहीं होती थी। इजराइल में उभरी वंश ने समारिया नाम से एक नवीन राजधानी बनाई और खुले रुप में फोनेशियन प्रकार की मूर्ति पूजा का समर्थन किया। यहाँ तक कि रानी जजेबेल, अहाब की पत्नी, ने इस नयी राजधानी में अपने ईश्वर 'बाल' के सम्मान में एक भव्य मन्दिर का निर्माण कराया। किंतु इजराइल के धर्म नेताओं ने मूर्ति पूजा का घोर विरोध किया और इसकी उपेक्षा राजा तक नहीं कर पाया।

आठवीं शताब्दी के जेरूसलम के नबियों जैसे कि आमोस, होशिया एवं ईसाह ने ईश्वर का मूसा के साथ अनुबंध को, खाली कर्मकाण्डीय प्रथाओं के विपरीत, अपने मानव भाई–बन्धुओं के प्रति नैतिक कर्तव्यों एवं प्यार के रूप में विवेचित एवं प्रचलित किया। इसी के साथ, जेहोसापत, हेजाखिया और जोशिहा के शासन में शुद्ध धर्म (जेरुसलम का यहोवा सम्प्रदाय) को स्थापित करने का प्रयास भी किया गया। इस प्रकार धर्म का केंद्र कर्मकाण्डों में नहीं अपितु एक नैतिक जीवन में स्थापित कर दिया गया।

721ई.पू. में असीरियन लोगों ने इजराइल को हरा कर समारिया पर कब्जा कर लिया। वे अपने प्रान्तीय लोगों को ले आए और उन्हें समारिया में स्थापित किया और उन्हें मिश्रित विवाहों के लिए विवश किया। इस परंपरा ने एक सम्मिश्रित पीढ़ी को जन्म दिया, जिसे बाद में समारिटन्स के नाम से जाना गया। इनका मानना था कि वास्तविक पूजा गिरिजम् पर्वत पर ही करनी चाहिए।

605 ई.पू. में बेबीलोन के आक्रांताओं ने असीरियन को हराया और 597 और 587 ई. पू. में जोदाह पर आक्रमण किया। सोलोमन के मंदिर को नष्ट कर दिया गया। इसमें परिणामस्वरूप हुए यहूदियों के निष्कासन ने उनके अन्दर भविष्य में किसी मसीहा (धार्मिक–राजनैतिक–सैन्य नेता) के द्वारा राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना की आशा भी जगाई। यह मसीहा डेविड का वंशज एवं एक धार्मिक –राजनैतिक–सैन्य नेता था। धनी एवं सुशिक्षित यहूदियों के निष्कासन और उनके बेबीलोनिया में लगभग 50 वर्षों के निर्वासन ने इस धर्म में क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किये। यह आध्यात्मिक शुद्धिकरण का काल था। अपनी मातृभूमि से कटे होने के कारण जेरेमिया एवं एजकील ने मंदिर एवं बाहय कर्मकाण्ड प्रथा से रहित वैयक्तिक धर्म के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने *तोरा*, धार्मिक एवं ऐतिहासिक पुस्तकों एवं अन्य साहित्य का वृहद् संकलन, का आरंभ किया। ये निष्कासित उपदेशक ऐसे लोगों की बात करते थे, जो आने वाले अच्छे समय (मसीहा के आने का काल) में ईश्वर के दिए गए वचन की पूर्णता के साक्षी बनेंगे।

फारस के राजा साइरस ने 535 ई.पू. बेबीलोनियों पर विजय प्राप्त की और 537 ई. पू. में यहूदियों को उनकी मातृभूमि फिलिस्तीन में लौटने की अनुमति प्रदान की। इनमें से कुछ तो फारस में ही रह गए। और कुछ जेरुसलम लौट आए। अब यहूदियों ने उन लोगों के जीवन का भी विवेचन करना आरंभ कर दिया जो कि यहूदी नहीं थे। यहोवा के ये पूजक स्वयं को फारस के अधिक निकट पाते थे, न कि बेबीलोन के। इसका कारण यह था कि फारसी व्यक्ति अपने ईश्वर के लिए मूर्ति अथवा प्रतीकों का प्रयोग नहीं करते थे। बेबीलोन के मिथकों, शैतान के प्रत्यय, मृतक के पुनर्जीवन एवं जादुई कल्प आदि ने यहूदी धर्म पर प्रभाव डालना आरंभ कर दिया और धीरे–धीरे इन विचारों ने ईसाई युग में भी अपनी जगह बना ली। यही कारण है कि *बाइबिल* की उद्भव की कथाओं में ये सारे प्रत्यय पाए जाते हैं।

अपनी मातृभूमि लौटने वाले यहूदियों ने एक धर्म शासन स्थापित करने का निर्णय लिया। किंतु यह युग दृढ धार्मिक नियमों का युग था। जनता प्राचीन नियमों के पालन के लिए कटिबद्ध थी। हांलाकि हगाई, जेखारिया एवं मालाची जैसे उपदेशकों ने नैतिक जीवन पर अत्यधिक जोर दिया, किंतु प्राचीन नियम बने रहे। जेरुबाबिल, एजश और नेहेनिया जैसे नेताओं ने ऐसे पड़ोसी गैर–यहूदियों, जो मूसा के नियमों का पालन नहीं करते थे, के विरुद्ध मुहिम छेड़ दी।

यहूदियों का यह अलगाववाद एक शक्तिशाली शत्रु सिकन्दर महान का कारक बना। सिंकदर महान ने फिलिस्तीन पर 332 ई.पू. में विजय प्राप्त की और यूनानी भाषा को उन पर थोप दिया। इस प्रकार हेलेनिस्टिक दर्शन, भाषा, संस्कृति, व्यवहार एवं विचार ने फिलिस्तीन को पूरी तरह प्रभावित किया। हालांकि धर्मनिष्ठ यहूदियों (*हासिदिम*) ने इस नये प्रभाव से बचने का पूरा प्रयास किया किंतु धर्म निरपेक्ष यहूदी इस नये दर्शन की ओर बहुत आकर्षित हुए।

एन्टियोकस IV एपिफेनीज नामक राजा ने इस धर्म का दमन करने का प्रयास किया किंतु उसे हैसोमेनियन्स के द्वारा तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा। मकाबीज की पुस्तक, जो बाइबल का एक भाग है, में इस पवित्र युद्ध का विस्तृत विवरण मिलता है। किंतु जब जुनाथन मकाबियस ने उच्च पुजारी प्रथा को हटाने का प्रयास किया तो अति रुढ़िवादी यहूदियों ने कुमरान की गुफाओं में शरण ले ली और स्वयं को पवित्र ग्रंथों के अध्ययन, शोध एवं पुर्नलेखन में व्यस्त कर लिया। इस समूह के लोगों (जिन्हें पहले *हासिदिम* कहा जाता था) को *ऐसिन्स ऑफ कुमरान* कहा जाने लगा। इनमें से कुछ ने आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया। ये द्वैतवाद के दर्शन के समर्थक थे; यथा प्रकाश की संतानों एवं अंधकार की संतानों के मध्य संग्राम होता रहता है। (यह जेहाद नहीं है बल्कि मात्र एक आध्यात्मिक द्वैतवाद है)।

धीरे–धीरे इन इजराइलियों में दो अन्य समूह और उभर कर आए। इनमें से पहले तो मूसा के नियमों के लिए कटिबद्ध थे। किंतु दूसरे इन नियमों के प्रति उतने कटिबद्ध नहीं थे। जहां एक ओर कटिबद्ध समूह को 'फेरेसिस' अथवा 'अलगाववादी' कहा जाता था वहीं दूसरे समूह को 'सादुसिस' कहा जाता था। और इसमें मुख्यतः वह पुजारी वर्ग था, जो समय की मांग के अनुरुप परिवर्तन में विश्वास रखता था। इस 'सादुसिस' समूह ने लिखित *तोरा* को नियामक माना जब कि 'फेरेसिस' मौखिक *तौरा* की विश्वसनीयता में विश्वास करते थे।

पहली शताब्दी के यहूदी इतिहासकार फलेबियस जोसेफस ने अपनी पुस्तक *ऐन्टिक्विटिस ऑफ द ज्यूस* में यह वर्णित किया कि इन दोनों के अलावा एक अन्य समूह और भी विद्यमान था, जिसे 'जीलॉटस' कहा जाता था और जो तथाकथित चतुर्थ दर्शन (विदेशी प्रभुत्व के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष) में विश्वास रखते थे।

यह स्मरणीय है कि हेलेनिस्टिक एवं यहूदी संस्कृतियों के मध्य दोस्ताना संबंध थे। उदाहरणार्थ, एलिक्जेड्रिया नगर में द्वितीय शताब्दी ई.पू. *हिब्रू बाइबिल* का द्वितीय शताब्दी यूनानी में अनुवाद किया गया और इसे *सेप्टुआजिट* कहा गया। तथापि, बौद्विक ग्रंथों विशेषकर *सोलोमन* की बौद्धिक पुस्तक साक्षात्कार की बौद्धिकता, जो तोरा में वर्णित है, को स्वीकार करती है और इसे एपिक्यूरियन के हेलेनिज्म में प्रस्तावित भौतिक–ज्ञान पर आधारित ज्ञान से उच्च मानता है। किंतु सोलोमन की बौद्धिक पुस्तक ने भी प्लेटो एवं स्टोइक दर्शन (हेलेनिज्म की दो शाखा) से कई विचार लिए। निष्कर्षतः *हुकमा* (हिब्रू संस्कृति की बौद्धता) का यूनानीकरण हो गया। फाइलों, एलिक्जेंड़िया का यहूदी, ने यूनानी संस्कृति एवं मानवतावादी दर्शन में यहूदी संस्कृति को घुसाया। इस प्रकार राष्ट्रीय हिब्रूवाद को पवित्र पुस्तकों की अलंकारिक व्याख्याओं

के द्वारा हेलेनिस्टिक वैश्विकता (कि सभी व्यक्तियों का उद्धार होगा) के अनुकूल बनाया गया। यह हेलेनिस्टिक वैश्विकता का विचार रूढ़िवादी रब्बियों द्वारा प्रस्तुत व्याख्या, जो बाद के पवित्र ग्रंथों से कड़े रूप में जुड़ी हुई थी, के विपरीत थी।

63 ई.पू. में रोमन जनरल पॉम्पी ने फलिस्तीन पर आक्रमण किया एवं तब से लेकर *न्यू टेस्टामेंट* के काल तक यहां रोमन प्रभुत्व रहा। 70वीं शताब्दी में मंदिरों को पूर्णतः नष्ट कर दिया गया अथवा जला दिया गया, जिसके कारण समस्त यहूदी विश्व में इधर–उधर बिखर गए।

2.4 यहूदी धर्म के विश्वास एवं व्यवहार

अपने 4000 वर्षों के संर्घषमय इतिहास में यह धर्म अनेकानेक उद्भवों से गुजरा। तथापि आज भी यह धर्म एक, अलैगिक, शाश्वत, रचयिता ईश्वर में आस्था रखता है। यह ईश्वर न्यायप्रिय एवं शांतिप्रिय राजा न्यायाधीश एव पिता के समान है। इस धर्म का आधार एकेश्वरवाद में आस्था है। प्रत्येक सब्त, त्यौहार एवं दैनिक प्रार्थना में प्रत्येक यहूदी *सेमा* प्रार्थना को दुहराता है, जिसमें कहा जाता हैः 'सुनो ए इजराइलः परमेश्वर हमारे एक मात्र प्रभु हैं एवं हम अपने समस्त ह्दय, आत्मा एवं सामर्थ्य से उन्हें प्रेम करते हैं।'

इस धर्म की विशिष्टता ईश्वर की ऐसी समझ में है, जिसके अनुसार ईश्वर एक जीवित, वैयक्तिक, पवित्र एवं दयावान शक्ति है। इस धर्म ने स्वयं को मात्र अपनी आंतरिक शक्ति के आधार पर ही बनाए रखा है। अनेकों कठिनाईयों के बाद भी इसने अपनी विशिष्टता को बचा रखा है।

यहूदियों को कई बार किताबी–लोग (The people of Book) भी कहा जाता है। ये पवित्र ग्रंथों के अध्ययन, विश्लेषण, एवं विवेचन पर अत्यधिक बल देते हैं। यहूदी धर्म का आधार इसकी *हिब्रू बाइबल* में ही निहित है। यहूदी इसे *तनाख* कहते हैं, जो *तोरा* (*बाइबल* की 5 पुस्तकों में से पहली) *नेबिम* (मसीहा) और *खेतुबिम* (अन्य लेखन) का परिवर्णी नाम है। इन ग्रंथों की आधिकारिक तिथि निर्धारित करने की प्रक्रिया 90 ई. में जामिया रब्बी के द्वारा शुरु हुई। यही कारण है कि *खेतुबिम* की अनेक पुस्तकों का तिथि निर्धारण नहीं हो पाया है।

एक यहूदी लड़के का सुन्नत संस्कार जन्म के आठवें दिन होता है, जिसे *ब्रित मिल्लाह* कहा जाता है। यहूदी लड़की का नामकरण भी जन्म के आठवें दिन होता है और इसे *ज़्वेद हबात* कहा जाता है। लड़के के सात वर्ष के होने पर उसे ग्रंथों के अध्ययन के लिए रब्बी के पास भेज दिया जाता है। यह 12 वर्ष की उम्र तक तब तक चलता है, जब तक कि वह *तोरा* का शिष्य होने का व्रत नहीं ले लेता। 13 साल की उम में वह *बार मिज्वाह* (अर्थात् आदेशों का पुत्र) हो जाता है, अर्थात् अब वह यहूदी समुदाय का पूर्ण सदस्य बन जाता है। वह *सेनेगोग* के समय बाइबल के एक अंश का उच्चारण करता है। आधुनिक काल में नवीन यहूदियों ने लड़कियों के लिए भी ऐसी ही प्रथा निकाली है, जिसे *बास मिज्वाह* कहा जाता है।

किसी रुढ़िवादी यहूदी का विवाह दो गवाहों के समक्ष एक समझौते के साथ होता है, जिसे *केतुवाह* कहते हैं। यह प्रपत्र दुल्हन के प्रति दूल्हे के उत्तरदायित्व को दर्शाता है। विवाह एक छत्र या *हुप्पा* के नीचे सम्पन्न होता हे। यह छत्र वर–वधु के बन्धन एवं उनके भविष्य के घर को प्रदर्शित करता है। वे दोनों एक ही गिलास में शराब पीते हैं जो इस बात को प्रदर्शित करता है कि अब से इन दोनों की जिन्दगी में सब कुछ साझा है। समारोह के अंत में दूल्हा एक गिलास को स्मृति के तौर पर तोड़ता है ताकि इन सुखद क्षणों में भी मंदिरों का ध्वंस स्मरण रहे।

मृत्यु शोक में भी यहूदियों के अपने कुछ संस्कार होते हैं। मृतक के परिवार के सदस्य साथ–साथ बैठ जाते हैं। वे अपने घर में सात दिन तक रहते हैं किन्तु *सब्त* के दिनों में वे रोते नहीं हैं। रोते समय वे अरमाइक में लिखी *कदीश* प्रार्थना को दुहराते रहते हैं। रूढ़िवादी यहूदी अपने पित्रों के लिए एक वर्ष तक रुदन करते हैं और *कदीश* प्रार्थना को दैनिक रुप से पढ़ते हैं। वे मरने वालों की बरसी (*यहरजित*) मनाते हैं एवं स्मरणीय प्रार्थना–*यिजखोर* का पवित्र दिन पर पाठ करते हैं। यहूदीवादी सृष्टि रचना, साक्षात्कार एवं पुर्नत्थान को त्यौहारों के रुप में मनाते हैं। प्रमुख तीर्थ स्थल सम्बन्धी त्यौहार हैं – *पेसच, शवोत* और *सुकोत*। प्रायश्चित का दिन (*योम किप्पुर*) एवं (*योम हशनाह*) स्मरण का दिन प्रमुख अवकाश माने जाते हैं। इसी प्रकार *हनुका,* यहूदियों के लिए दिवाली के समान त्यौहार और *पूरिम* अन्य त्यौहार है। *सब्त* इनका साप्ताहिक अवकाश है।

यहूदी *सेनेगोग* में एक आर्क के ऊपर *तोरा* रखा होता है, एक आधार (*बीमाह*), जिस पर *तोरा* को रखकर पढ़ा जाता है, होता है, और *नेरमिद*, जिस पर एक सदैव जलने वाला एक दीपक रखा होता है, वहां पर आर्क के सामने एक *अमुद* होता है। इस *अमुद* पर खड़े होकर *हज्जान* (प्रार्थना करने वाला) खड़ा होकर प्रार्थना करता है। *यासिवा* यहूदियों के विद्यालय का नाम है तथा *मिक्वाह* एक धार्मिक स्नान को कहते हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) मूसा के एकेश्वरवाद से आप क्या समझते हो?

....

....

....

....

2) यहूदी धर्म के दो प्रमुख धार्मिक व्यवहारों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

2.5 न्यू टेस्टामेंट का यहूदी धर्म

न्यू टेस्टामेंट के अनुसार इसाई धर्म यहूदी धर्म का आध्यात्मिक वंशज है। यीशू, पीटर एवं पाल तीनों ही मूलतः यहूदी थे। वस्तुतः इसाईयत का आरंभ एक नवीन यहूदी शाखा के रुप में हुआ था। जिसमें नाजरेथ के येशुआ अर्थात यीशू के उपदेशों का अनुपालन किया जाता है। इन्होंने अपना धर्म परिवर्तित नहीं किया बल्कि यह माना कि वे यहूदी धर्म की एक अलग शाखा अथवा अनुयायी है। इसे हम यहूदी धर्म के नाम से जानते हैं (रोम 11:11–13)।

2.6 रब्बीवादी यहूदी धर्म एवं साहित्य

न्यू टेस्टामेंट युग में रब्बीवादी यहूदी धर्म का उद्भव हुआ और इसने जेरुसलम के मंदिर पूजकों का स्थान ले लिया। 70 ई. में मंदिरों के ध्वंस के साथ ही जेरुसलम में यह धर्म समाप्त प्राय हो गया था। यहां तक की यहूदियों के इस क्षेत्र में कदम रखने पर भी मनाही थी। अतः यहूदी धर्म विखंडित हो गया था और धर्म परिवर्तन समाप्त प्रायः हो गया था। क्षेत्रीय पूजन स्थल (*सेनेगोग*) यहूदी जीवन के नवकेंद्र बन गये थे। पशु बलि त्याग दी गयी थी। ग्रंथों की विश्वसनीयता अब केंद्रीय पुजारी प्रथा से हटकर क्षेत्रीय शोधकर्ताओं एवं अध्यापकों पर आ गई थी जिसके फलस्वरुप रब्बीवादी यहूदी धर्म का जन्म हुआ।

अब, मौखिक उपदेशों को संग्रहीकृत करना यहूदियों के लिए अस्तित्व का प्रश्न बन गया था। रब्बी जुडा–हा–नसी (135–220 ई.), एक फिलिस्तीनी शोधकर्त्ता, ने रब्बीयों के मौखिक उपदेशों का संग्रहीकरण एवं संपादन किया एवं इस ग्रंथ को *मिश्ना* (शाब्दिक अर्थों में 'पुर्नअध्ययन') के नाम से जाना गया। इसे यहूदियों के 'मौखिक नियम' के रुप में भी जाना जात है। यह *बाइबल* के पश्चात यहूदियों का प्रथम लिखित विधिक संग्रह है। बेबीलोन के कुछ रब्बियों ने भी कुछ मौखिक नियमों का संग्रह किया। इस संग्रह एवं इसके अन्य विवेचनों को *तालमुड* (शाब्दिक अर्थों में उपदेश अथवा अध्ययन) कहा जाता है। यह नियम एवं गाथाओं की पुस्तक है, जिसमें लोगों के लिए नैतिक आचरण बताए गए हैं।

450–400 ई.पू. तक भी एक सामान्य यहूदी उस हिब्रू भाषा से अनभिज्ञ था, जिसमें *ओल्ड टेस्टामेंट* लिखा गया था। *नेह* 8:7 में वर्णित है कि लेवाइटस ने *तोरा* को सामान्य जंनता के लिए आरामाइक में अनुवादित किया जबकि एक फारसी वकील ऐजरा ने इसे हिब्रू में पढ़ा। ये आरमाइक अनुवाद *तोरा* की हल्की विवेचना के रुप में स्वीकार किए गए और इनके संग्रह को *तारगुम* कहा गया। उदाहरणार्थ यीशू ग्रंथों को हिब्रू में पढ़ते हैं और अरामाइक में विश्लेषित करते हैं (ल्यूक, 4:18–30)।

इस प्रकार मूसा के नियम के अनुपालन एवं शोध की निरंतर प्रक्रिया के कारण यहूदियों ने अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म को बचाए रखा। ऐसी मान्यता है कि *तोरा* को स्वयं ईश्वर के द्वारा एक फरिश्ते के माध्यम से मूसा तक पहुंचाया गया है। तत्पश्चात इसने मौखिक एवं लिखित दो आकार ग्रहण कर लिए। पवित्र ग्रंथ लिखित भाग के अन्तर्गत आते हैं। मौखिक उपदेश रब्बियों के द्वारा *तारगुम, निद्राश, मिश्ना, तालमुड, गेमारा, तोसेथा* आदि रुपों में पीढ़ी दर पीढ़ी प्रदान किए जाते रहे। इस मौखिक परंपरा ने *हलक्का* (जीवन के नियम) और *हगड्डा* (नियमों के विवेचन) के रुप में आकार ग्रहण किया। इस प्रकार, बुजुर्गों की परम्परा या यहूदी धर्म के पिताओं का विचार यहूदियों में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। 1871 ई. में यहूदी शोधकर्ता ग्रेट्स ने कहा कि हिब्रू साहित्य लगभग 189 ई. में *मिश्न* के साथ ही समाप्त हो जाता है।

मिद्राश (खोजना), हिब्रू ग्रंथों पर शोद्ध है। *मिद्रासिम, बाइबल* पर रब्बीयों द्वारा लिखी गई टीकाएं हैं। *गोमरा* (समापन), बाद के रब्बीयों के *मिश्ना* पर किए गए विवेचन है। *तोसेफ्ता* (संयोजन), *मिश्ना* के समान्तर नियमों का संकलन है। माना जाता है कि इसका संग्रह तीसरी एवं चौथी शताब्दी में रब्बी हिया और रब्बी ओसाया ने किया था।

2.7 मध्य एवं आधुनिक युग का यहूदी धर्म

यहूदियों का *सेनेगोग* अब उनके अध्ययन एवं सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बन

गया है। *सब्त*, पवित्र दिवस (*योमतोव*), सोमवार एवं गुरुवार पर *हिब्रू बाइबल* के कुछ अध्यायों का पाठ किया जाता है। शुक्रवार के सूर्यास्त से आरंभ होकर यह *सब्त* शनिवार के सूर्यास्त तक चलता है।

संगठन के द्वारा चुना गया रब्बी आध्यात्मिक नेता, शिक्षक एवं नियमों एवं ग्रंथों के विवेचन का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है। यहूदी धर्म का न तो कोई एक अधिकारी होता है और न ही ऐसी कोई वैश्विक संस्था होती है जो इस धर्म को संचालित करती हो।

रुढ़िवादी यहूदियों का मानना है कि *तोरा* का प्रत्येक शब्द सिनाई पर्वत पर स्वंय ईश्वर मुख से निकला है। साथ ही ये *शुलहन आरुख* में दिए गए नियमों, नीति की पुस्तकों एवं रब्बियों के निर्णयों को भी मानते हैं। मेमोनाइडस के द्वारा 13वीं शताब्दी में प्रस्तावित आस्था के 13 नियमों में से दो–*अनी मा आमीन* और *यिदगाल*–को बहुत से रुढ़िवादी यहूदी मानते हैं। पुरुष *किप्पा* नामक टोपी को ईश्वर के सम्मान के रुप में सदैव धारण किए रहते हैं। कुछ रुढ़िवादी पुरुष दाढ़ी और कलम भी रखते हैं। यहूदी *सब्त* को विश्राम, अध्ययन एवं प्रार्थना के दिवस के रुप में मनाते हैं। इस दिन वे न तो कार्य करते हैं और न यात्रा करते है और न ही धन का लेन–देन करते हैं। वे एक छोटे *मेजूजा* को अपने घर के दायें दरवाजे के ऊपर ईश्वर स्मरण के प्रतीक के रुप में रखते हैं। यह *मेजूजा* एक काष्ठ धातु अथवा कांच का बना हुआ ऐसा छोटा संदूक होता है, जिसमें *बाइबल* के 15 अंशों को रखा जाता है।

एक रुढ़िवादी यहूदी सदैव प्रातः प्रार्थना के समय *टेफिलिन* पहनता है। ये ऐसे छोटे डिब्बे होते हैं, जिनमें *बाइबल* के कुछ अंश परचों में लिखे होते हैं। एक चमड़े के पट्टे के द्वारा एक डिब्बे को सिर से तथा दूसरे पट्टे के द्वारा दूसरे डिब्बे को बायीं बाह के नीचे हृदय के समीप बांध कर रखा जाता है। यहूदी प्रार्थना करते समय *तलित* नामक शाल, जिसके चारों किनारों पर *तजितजित* लगे होते हैं, को ओढ़ लेते हैं। प्रत्येक यहूदी के जीवन के मार्ग दर्शक 613 व्रत *तोरा* में लिखे गए हैं। यह संख्या *तलित* के धागों के माध्यम से प्रदर्शित की जाती है। प्रार्थना का नेता एक विशेष परिधान पहनता है जिसे *'कितेल'* कहा जाता है। सामूहिक प्रार्थना के लिए कम से कम दस वयस्क यहूदियों की आवश्यकता होती है, जिन्हें मियाँ कहा जाता है।

प्रत्येक रुढ़िवादी यहूदी कठोर खान–पान के नियमों का पालन करता है। वे शूकर–माँस का सर्वथा निषेध करते हैं। वे मात्र ऐसे पशुओं का मांस ग्रहण करते हैं, जो जुगाली करते हैं और जिनकी झुकी हुई सींघे होती हैं जैसे गाय एवं भेड़। वे मात्र ऐसी मछलियां ग्रहण करते हैं जिसकी चमड़ी पर धारिय़ां होती हैं। वे मात्र हलाल मांस ग्रहण करते हैं और खाने से पूर्व मांस से रक्त के सभी अवशेष हटा देते हैं। वे दुग्ध आधारित खाद्य पदार्थों को अलग रखते हैं एवं उन्हें बाकी आहारों के साथ प्रस्तुत नहीं करते हैं। यहूदी खाद्य नियमों पर आधारित ऐसे खाने को *कोशर* (खाने के लिए उपयुक्त) कहते हैं। *सेनेगोग* में पुरुष एवं महिलाएं अलग–अलग बैठते हैं।

मध्यकाल में यूरोप एवं पं. एशिया प्रमुखतः इसाई एवं इस्लामिक राष्ट्रों में विभाजित थे। इसी प्रकार यहूदी भी स्वयं दो भागों में विभक्त थे। उन्हें *सेफरदी* एवं *अश्केनाजी* कहा जाता था। जहां *सेफरदी* स्पेन एवं पुर्तगाल में रहते थे और बेबीलोन की संस्कृति से जुड़े हुए थे, वहीं *अश्केनाजी* फ्रांस, जर्मनी और पोलैण्ड में निवास करते थे और फिलिस्तीन और रोम की संस्कृति से जुड़े हुए थे। पिछली दो शताब्दियों में अश्केनाजी यहूदी अनगिनत शाखाओं में बंट चुके हैं। रहस्यवादी (*कब्बला*) एवं *हासिदिम* (ये काला कटा हुआ कोट पहनते हैं) नवीन शाखा के रुप में सामने आए हैं। हासिदिम यहूदी रब्बी यिसरोल बेन एलाइजेर (1700–1760) की शिक्षाओं पर

आधारित हारेदि यहूदियों की एक शाखा है। ये *कब्बला* को अपने पवित्र ग्रंथ मानते हैं। वे *रब्बे* को अपना सर्वोच्च धार्मिक नेता स्वीकार करते हैं। 18वीं शताब्दि के आगमन ने यहूदी पुनर्जागरण (*हस्काल*) को स्थापित किया।

19वीं शताब्दि में संस्कृतिवादी एवं सुधारवादी यहूदी धर्म उत्पन्न हुआ। इसका प्रमुख उद्देश्य रुढ़िवादी यहूदी धर्म (15 लाख अमेरिका एवं कनाडा में 800 संगठन) के कट्टरपन को कम करना था। हांलाकि यहूदी नियम की सर्वोच्चता सर्वस्वीकार्य है किंतु संस्कृतिवादीयों (मूसावादी यहूदी) का मानना है कि 'प्रकटीकरण' को अनेक प्रकार से विश्लेषित किया जा सकता है। वे यह प्रदर्शित करते हैं कि यहूदी नियम जड़ न होकर परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। इनका मानना है कि *तोरा* एक दैवीय लेख है, जिसे पैगम्बरों ने स्वयं प्रभु के अनुसार लिखा है। किंतु ये उस रुढ़िवादी स्थिति को नकारते हैं, जिसके अनुसार यह नियम प्रभु द्वारा मूसा को प्रदत्त किया गया था। इनका यह भी मानना था कि दूसरे धर्मों की आस्थाओं को पूर्ण सम्मान देना चाहिए और स्त्री–पुरुष *सेनेगोग* में साथ–साथ बैठ सकते हैं।

सुधारवादी यहूदी धर्म जर्मनी में पुनर्जागरण की प्रतिक्रिया स्वरुप उत्पन्न हुआ। सुधारवादियों का मानना है कि प्रत्येक पीढ़ी को यह अधिकार है कि वह नियमों को माने, सुधारे या नकार दे। इसने प्रथमतः यहूदी धर्म को एक नस्ल अथवा संस्कृति न मानकर एक धर्म माना। इसने *तोरा* के कर्मकाण्ड नियमों को पूर्णतः नकार दिया। किंतु नैतिक नियमों को स्वीकार किया, तथापि वे *सब्त* के पवित्र कैलेण्डर को स्वीकार करते हैं। वे कभी–कभी खाद्य नियमों को मानते हैं और कभी–कभी नहीं भी मानते हैं। *सेनेगोग* के समय टोपी नहीं पहनते और प्रार्थना हिब्रू की पवित्र भाषा में न होकर क्षेत्रीय भाषा में होती है। महिलाओं को अधिकाधिक भूमिका प्रदान की जाती है। आज अमेरिका एवं कनाड़ा में दस लाख के ज्यादा यहूदी और 700 से ज्यादा संगठन है। संस्कृतिवादी एवं सुधारवादी यहूदी अब मसीहा की बात न करके मसीहा के न्याय के साम्राज्य की बात करते हैं। वे मानते हैं कि स्वतंत्रता एवं न्याय का काल अवश्य आएगा और इसके लिए किसी चमत्कार की नहीं अपितु मात्र प्रभु इच्छा एवं मानव प्रयासों की आवश्यकता है।

इस आंदोलन के प्रभावस्वरुप 19वीं शताब्दी के अंतकाल में *जियोनिज्म* उत्पन्न हुआ। यूरोप में यहूदी धर्म ने भयंकर दमन का सामना किया। हिटलर ने अधिकाधिक यहूदियों का दंमन किया एवं साठ लाख से अधिक यहूदियों को जर्मन नाजियों ने मार दिया। सामान्यतः नाजी *करैत* (मूर्तिकार) को यहूदी नहीं मानते थे और इसलिए उन्हें छोड़ दिया गया। यह संभवतः धार्मिक एवं नस्लीय असहिष्णुता का सबसे बड़ा उदाहरण है। स्पेन में भी यहूदियों पर आतंक छाया रहा और अनगिनत यहूदियों को जला दिया गया। फलस्वरुप अधिकाधिक यहूदी फिलिस्तीन चले गये और 18 मई 1948 को एक नवीन राष्ट्र के रुप में इजराइल का जन्म हुआ।

यहूदियों का उद्भव राष्ट्र फिलिस्तीन सन् 1917 तक तुर्की साम्राज्य के आधीन था। किंतु प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय के पश्चात अंग्रेजों ने इसका अधिकांश भाग अपने कब्जे में कर लिया था। तुर्कों को पराजित करने में सहायता के पुरस्कार स्वरुप अंग्रेजों ने फिलिस्तीन को विभक्त कर इसका बड़ा भाग बेदोइन अरब, जिसका नाम अब्दुल्ला था, के नाम कर दिया था। बाद में ये अब्दुल्ला वर्तमान जार्डन के प्रथम हश्मी राजा बन गए। तथापि, बचा हुआ फिलिस्तीन अंग्रेजों के शासन के आधीन ही रहा।

सन् 1947 में अंग्रेजों ने फिलिस्तीनी भाग, जो अरब भाग एवं इसराइल भाग में बंटा था, के ऊपर से अपना अधिकार छोड़ दिया। जिसके परिणाम स्वरुप अरब क्षेत्र जार्डन

में समाहित हो गया। इस विभाजन को यहूदियों ने तो स्वीकार का लिया पर अरबों ने नहीं। परिणामतः अरब सन् 1948 में युद्धरत हो गए, किंतु उन्हें पराजय का सामना करना पडा। अरब राष्ट्रों एवं इजराइली अरबों को यह तथ्य स्वीकार ही नहीं था कि इजराइल का गठन हो चुका है। किंतु मध्य पूर्व की दमनात्मक परिस्थितियों में भी इजराइल ने बहुत प्रगति की। ऐसी परिस्थितियों में कोई भी अन्य समुदाय संभवतः नष्ट हो गया होता। वस्तुतः इस समुदाय का इतिहास उतना ही गौरवशाली है, जितना इसका वर्तमान। इसने हमें हब्राहम, मूसा, सोलोमन, यीशू मसीह, मार्क्स, फायड, आइंस्टाइन सहित अनेकानेक विभूतियां दी है।

सन् 2007 की गणना के अनुसार विश्व में लगभग एक करोड़ छियालिस लाख यहूदी हैं। जिनमें से सत्तर लाख अमेरिका में और करीब 45 लाख इजराइल में हैं। हालांकि ऐसा मानना है कि 3000 ई.पू. से भारत एवं फिलिस्तीन के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं, किंतु प्रमाण हमें बताते हैं कि कम से कम पहली शताब्दी से तो ये सम्बन्ध निश्चयपूर्वक रहे ही हैं। भारत में अधिकांश यहूदी दक्षिण के केरल राज्य में पाये जाते हैं। कोचीन में इनका *सेनेगोग* भी है। साथ ही मुंबई और पुणे में भी यहूदी बहुतायत में निवास करते हैं।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) *न्यूटेस्टामेंट* का यहूदी धर्म क्या है?

....

....

....

....

2) रब्बीयों का यहूदी धर्म क्या है?

....

....

....

....

2.8 सारांश

जैसा कि हमने देखा यहूदी धर्म विश्वासों एवं व्यवहारों की ऐसी व्यवस्था है जो *हिब्रू बाइबल* से उत्पन्न होती है और बाद में *तालमूड* और अन्य ग्रंथों में विवेचित यहूदी धर्म को प्रथम एकेश्वरवादी धर्म के रुप में स्वीकार करती है। यह धर्म विश्व के प्राचीनतक जीवित धर्मों में से एक है। इसके ग्रंथ एवं संस्कृति अन्य इब्राहीमि धर्मों के भी आधार है। यहूदी इतिहास, नियम एवं नैतिकता, इसाई एवं इस्लाम धर्म के आधार स्तम्भ के रूप में कार्य करते हैं। पश्चिमी इसाईयत के आधार के रुप में इसके कई पक्ष धर्म निरपेक्ष पाश्चात्य विचारों जैसा कि नैतिकता एवं वैश्विक नियम के पूर्णतः समान है।

2.9 प्रमुख शब्द

दस आदेश (Decalogue) : सिनाई पर्वत पर यहोवा द्वारा दिए गए धार्मिक एवं नैतिक आदेशात्मक नियमों की सूची, जो दो पत्थर की पट्टिकाओं पर लिखे थे, को दस आदेश के नाम से जाना जाता है।

साक्षीपत्र का सन्दूक (Ark of Covenant) : यह एक ऐसा सन्दूक था जिसके अन्दर दस आदेश खुदी दो पत्थर की पट्टियां रखी गयी थीं। इसका वर्णन *बुक्स ऑफ एक्सोडस* में मिलता है।

2.10 अन्य पुस्तकें और संदर्भ

कोगिन्स, आर., *समारिटन्स एण्ड ज्यूस,* एटलांटा, 1975

गोटवाल्ड, जे., *द ट्राइब्स ऑफ यहावा,* मेरीक्नोल, 1979.

ग्रे, जे., *द लेगेसी ऑफ केनन,* लीडन, 1956.

ग्रीन, डब्ल्यू. एस., 'फर्स्ट सेन्यूरी पारसीयनिजम', इन *एपरोचिज टु सेन्सियेन्ट जूडाइज्म : थ्योरी एण्ड प्रैक्टेसिस,* मिसाउला, 1978.

काफमेन, वाई., *हिस्ट्री ऑफ द रिलिजन ऑफ इसराइल,* न्यूयार्क, 1977.

मिलर, जे., *द ऑल्ड टेस्टामेंट एण्ड हिस्टोरियन,* फिलडेल्फिया, 1976.

पोटर, बी., *आरकाइब्स फ्रोम ऐलिफेन्टाइन,* ब्रकले, 1968.

सिमोन, एम.; *ज्यूस सेक्टस एट द टाइम्स ऑफ जीसस,* फिलडेल्फिया, 1967.

वचाइजमैन, डी., ऐडि., *प्यूपिलस ऑफ ऑल्ड टेस्टामेंट टाइम्स,* आक्सफ्रोड, 1973.

यादिन., वाई., *बार–कोखबा,* लन्दन, 1971.

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 इजराइल के लोगों को मिश्र के फराहों से आजाद कराने के पश्चात इन यहूदियों को इजराइल की पवित्र भूमि तक पहुंचाना मूसा का प्रथम दायित्व था। साथ ही उन्होंने विरोधी समुदायों के मध्य मधुर संबंध के लिए बुद्धिमता पूर्ण नियम भी बनाए। जिन्हें 'दस आदेश' कहा गया।

इस प्रश्न पर कि क्या मूसा के काल में एकेश्वरवाद विद्यमान था, बहुत विवाद रहे हैं। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि मूसा ने एकेश्वरवाद की स्थापना का प्रयास तो किया ही था। ये मूसा ही थे, जिन्होंने पवित्र स्तूप बनवाया और पवित्र कर्मकाण्ड, बलिदान, सांस्कृतिक व्यवहारों, *सब्त* और *पासोवर* की स्थापना की और पुजारी परिवारों को *तोरा* के उपदेश देने एवं पवित्र स्थलों की रक्षा के लिए प्रेरित किया।

2 यहूदी बालक का संस्कार जन्म के आठवें दिन होता है और इसे *ब्रितमिला* कहा जाता है। यहूदी बालिका का नामकरण भी आठवें दिन होता है। जिसे *जवेद*

हब्त कहा जाता है। जब बालक 7 वर्ष का हो जाता है तो उसे पवित्र ग्रंथों के अध्ययन के लिए भेजा जाता है। यह 12 वर्ष की आयु तक चलता है जिसके बाद वह *तोरा* के अनुयायी के रुप में प्रण लेता है। 13 वर्ष की आयु में वह *बार–मिज्वा* बन जाता है और इस प्रकार यहूदी समुदाय का पूर्ण सदस्य बन जाता है। वह *सेनेगोग* पर एक विशेष प्रक्रिया में *बाइबल* के अंशों का पाठ करता है।

एक रुढ़िवादी यहूदी का विवाह *केतुबाह* से प्रारंभ होता है। यह 2 गवाहों के समक्ष दूल्हे एवं दुल्हन के मध्य एक समझौता है। यह लेख दुल्हन के प्रति दूल्हे के उत्तरदायित्व को दर्शाता है। यह विवाह एक *हुप्पा* के अंदर होता है जो उनमें आने वाले जीवन के साथ को एवं उनके घर को प्रदर्शित करता है। फिर, दोनों एक प्याले से मदिरा का सेवन करते हैं। यह साझे जीवन का प्रतीक है। अंत में दूल्हा एक प्याला तोडता है, जिसका तात्पर्य है कि इन खुशी के क्षणों में भी मंदिर के ध्वंस का स्मरण रहे।

बोध प्रश्न 2

1 *न्यू टेस्टामेंट* इसाइयत को यहूदी धर्म के आध्यात्मिक वंशज के रुप में स्वीकार करता है। यीशु, पीटर एवं पाल सभी यहूदी थे। ईसाइयत एक नवीन यहूदी शाखा के रुप में प्रारंभ हुई और इसमें नाजारथ के येशुआ अर्थात यीशू के उपदेशों का अनुपालन किया जाता है। इन्होंने अपना धर्म परिवर्तित नहीं किया, बल्कि स्वयं को यहूदी धर्म की एक शाखा माना। इसे ही हम आज 'इसाई यहूदी धर्म' कहते हैं।

2 रब्बीवादी यहूदी धर्म का उद्‌भव *न्यू टेस्टामेंट* के युग में हुआ और उसने मंदिर पूजक समुदाय के स्थान पर जेरुसलम में प्रभाव बना लिया। 70 ई. में मंदिरों के नाश के साथ ही जेरुसलम में इस धर्म का प्रभाव समाप्त हो गया। यहूदियों को यहां कदम रखने से प्रतिबंधित कर दिया गया। यहूदी धर्म विखंडित हो गया और इसमें धर्म परिवर्तन पर रोक लगा दी गयी। क्षेत्रीय *सेनेगोग* यहूदी जीवन के नये केंद्र बन गये। पशु बलि रोक दी गयी एवं अधिकार केंद्रीय पुजारी व्यवस्था से बदल कर क्षेत्रीय विद्वानों एवं शिक्षकों के हाथों में आ गये तथा इस प्रकार रब्बी यहूदी धर्म का जन्म हुआ।